आज़ादी का अमृत महोत्सव

आधुनिक भारत के इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि

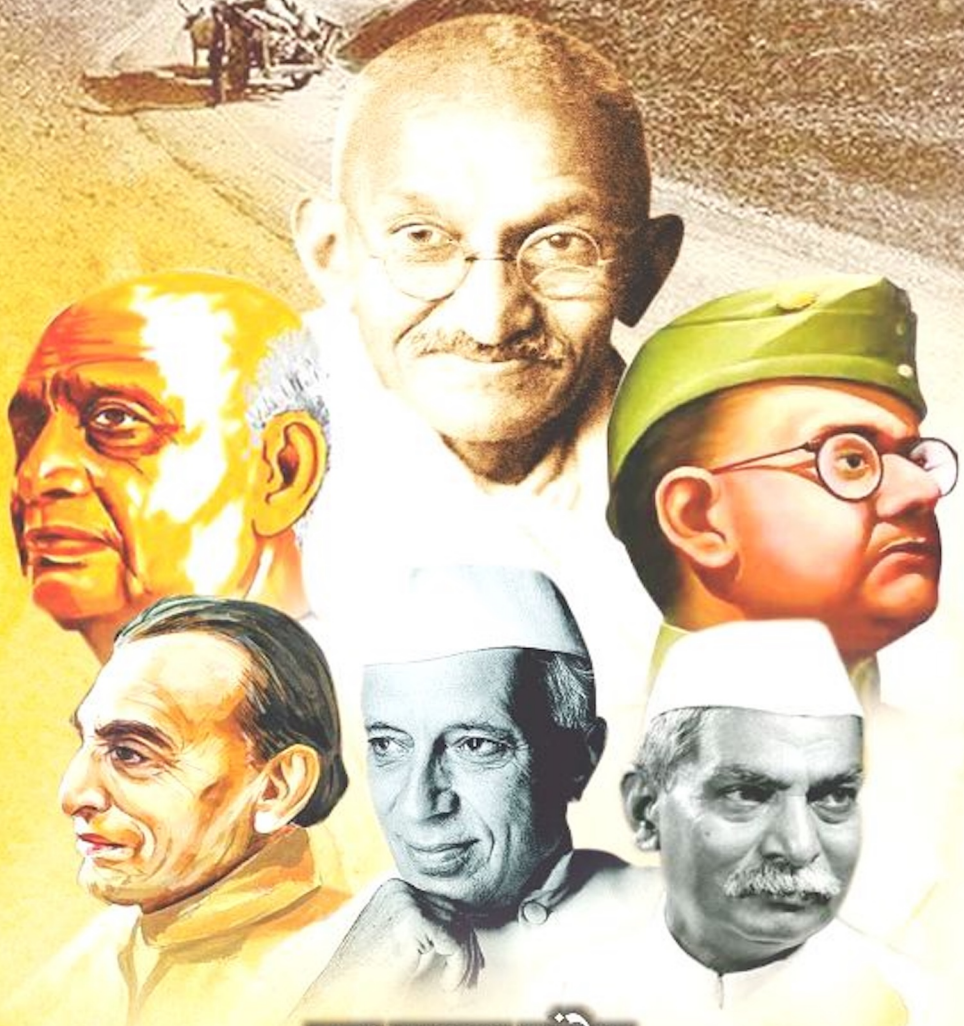

ब्रज कुमार पांडेय

आजादी की 75वीं वर्षगाँठ के बहाने

आधुनिक भारत के इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि

डॉ. व्रज कुमार पांडेय

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-93-95380-15-7

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण
मीना-किशन सिंह

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

AZADI KEE 75VI VARSHGANTH KE BAHANE :
AADHUNIK BHARAT KE ITIHAS PAR EK VIHANGAM DRISTI
A critical Analysis *by Dr. Braj Kumar Pandey*

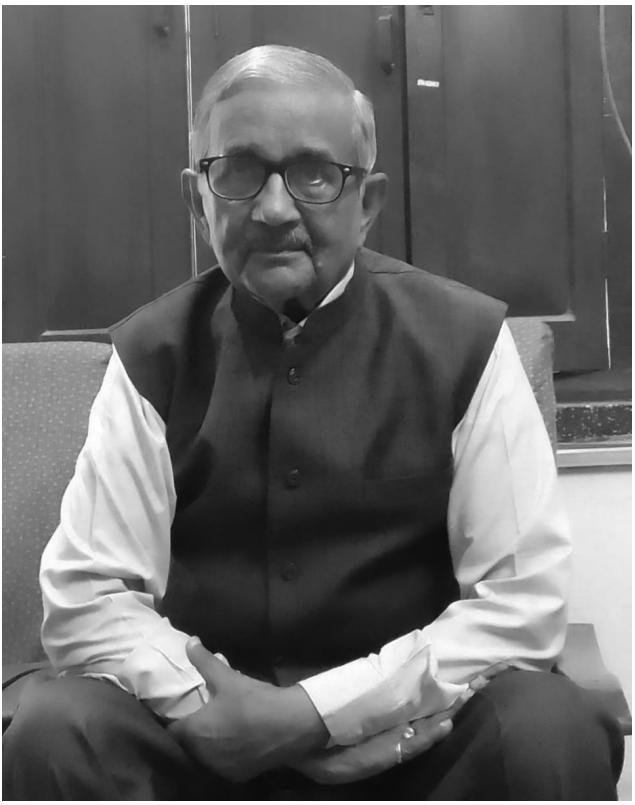

प्रस्तुत पुस्तक प्रो. (डॉ.) सुरेन्द्र प्रसाद को समर्पित है
वे अपने विषय के निष्णात विद्वान और कुशल शिक्षक रहे हैं।
इन्होंने अपने जीवन के अनमोल दिन कॉलेज के दार्शनिक और समाज
विज्ञानी प्राध्यापक सहयात्रियों के साथ बिताया।
इनकी लम्बी आयु की शुभकामनाओं के साथ–

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक 275 वर्ष के भारत के संक्षिप्त इतिहास से जुड़ी है। 200 वर्ष गुलामी के – 75 वर्ष आजादी के।

यह पुस्तक ऐसे समय प्रकाशित हो रही है जब देश धार्मिक उन्माद से जूझ रहा है। राष्ट्रवाद के नाम पर जनता को उन्मत्त बनाया जा रहा है। गंगा-यमुनी संस्कृति को नष्ट किया जा रहा है। भारत के स्वर्णिम इतिहास पर कालिख पोता जा रहा है। देश के विश्वविद्यालयों को बन्द करने की बात सोची जा रही है ताकि अज्ञानी शासक से ज्ञानी प्रश्न नहीं कर सके। विविधता में एकता को एक भारत श्रेष्ठ भारत के नारे से मिटाने की कोशिश हो रही है। सतरंगा भारत को एक रंगा बनाने की कोशिश हो रही है। ऐसे विखंडन के समय में यह 275 वर्षों का इतिहास आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है कि आप अपने पूर्व को आज समझने में सफल हों।

मैं जानता हूँ कि मोदी के सिरफिरे विद्वानों को यह किताब हाथ लग जाय तो सम्भव है उनकी साजिश से मैं अपने 85 वर्षों के जीवन का शेष उनकी जेल में काटूँ।

व्रज कुमार पांडेय

विषय सूची

भूमिका 5

आजादी पूर्व भारत

1. गुलाम भारत का वैचारिक द्वन्द्व 11
2. आजादी पूर्व भारत का आर्थिक चिन्तन 23
3. भारतीय जनता का मुक्ति-संग्राम 42
4. राजा राममोहन राय का सामाजिक सुधार 70
5. आजादी पूर्व भारत की संस्कृति का स्वरूप 78
6. जालियाँवाला बाग हत्याकांड की पृष्ठभूमि 88
7. भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी जी द्वारा सूत्रपात किये गये आन्दोलनों का विशेष महत्त्व 96
8. आजादी पूर्व काँग्रेस के तीन महत्त्वपूर्ण अधिवेशन (काँग्रेस) 106
   (I) लाहौर काँग्रेस 106
   (II) कराची काँग्रेस 115
   (III) लखनऊ और फैज़पुर काँग्रेस 118

आजादी बाद भारत

9. आजादी बाद भारत की राजनीति 143
10. एक स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था की ओर 149
11. आपातकाल की 46वीं वर्षगाँठ 166
12. भारत के संसदीय लोकतंत्र को भटकाने और कमजोर करने वाली नीतियाँ और विचार 172
13. अन्ना हजारे के आन्दोलन का 21वीं सदी की भारतीय राजनीति पर दूरगामी प्रभाव 178
14. नरसिम्हा राव से डॉ. मनमोहन सिंह के शासन काल की आर्थिक सोच की दिशा 185
15. आजादी बाद भारतीय समाज 189

आजादी पूर्व भारत

गुलाम भारत का वैचारिक द्वन्द्व

आधुनिक भारत का इतिहास अठारहवीं शताब्दी से माना जाता है। इसी समय अँग्रेज भारत में आते हैं, जम जाते हैं और अन्ततः शासन की बागडोर भी अपने हाथ में ले लेते हैं। इसी सन्दर्भ में हमारे इतिहास का एक सन्देहास्पद पहलू यह मान लिया जाता है कि आधुनिक भारत का उदय अँग्रेजी हुकूमत के साथ होता है। अँग्रेजों ने स्वयं भारतीय इतिहास के आधुनिक काल को 'अँग्रेजी काल' के नाम से पुकारा; लेकिन, जहाँ अँग्रेज भारत के प्राचीन इतिहास को हिन्दू कालीन इतिहास और मध्यकाल को 'मुस्लिम काल' के नाम से पुकारते हैं। इन दोनों कालों पर धार्मिक रंग चढ़ाकर इतिहास की एक अवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। अँग्रेज इतिहासकारों को काले लोगों को सभ्य बनाने के नाम पर ऐसी हिम्मत होनी चाहिए थी कि भारत के आधुनिक काल को वे 'ईसाई काल' के नाम से पुकारते। लेकिन, यह साहस लुटेरों के पास नहीं हो सका था और उन्होंने भारत को आधुनिक बनाने का श्रेय अपने पर थोप लेने की साजिश करने की बात से बाज भी नहीं आये थे। इतनी बात तो हमारे बीच साफ होनी ही चाहिए थी कि अँग्रेजों ने हमें गुलाम बनाया था, आधुनिक नहीं। क्योंकि अँग्रेज विजेता शासक थे और स्वयं 'आधुनिक' थे। लेकिन, अपने साम्राज्य की स्थापना के लिए और उसको चलाते हुए उन्होंने हिन्दुस्तान में जो कुछ किया, क्या उससे हिन्दुस्तान आधुनिक बना या केवल विचार, भाषा और वेश-भूषा में अँग्रेजों की नकल करने वाला एक बिचौलिया वर्ग बना।

फिर भी अँग्रेजी शासन ने सर्वप्रथम भारत को एक आधुनिक जीवन की ओर उन्मुख करने का प्रयास जरूर किया। यद्यपि अँग्रेज भारत का आधुनिकीकरण करने नहीं; सोने की चिड़िया का अंडा चुराने आये थे।

उन्होंने भारतीय जुलाहों के अँगूठे इसलिए नहीं काटे कि वे पिछड़ी हुई तथा कम गतिवाली मशीनें रखते थे। सच्चाई तो यह है कि इनके चरखे-करघों को लंकाशायर की मशीनों के संरक्षण के लिए नष्ट किया गया। इसी प्रकार रेल, डाक-तार, अखबार, रेडियो, विश्वविद्यालय, प्रशासन आदि का विस्तार उन्होंने अपने राज्य को फैलाने और मजबूत करने के लिए किया था। यह सब इस चालाकी से किया गया कि आज भारतीयों को भी समझना पड़ता है कि भारत में अँग्रेजी राज्य की भूमिका लुटेरों की भूमिका रही है। लेकिन, अँग्रेजों की चालाकी से हो या जैसे भी, सन् 1772 में राजा राममोहन राय के जन्म के एक वर्ष बाद भारत में कम्पनी शासन के लिए 'रेगुलेटिंग ऐक्ट' आया। इस नये ऐक्ट से भारत में पश्चिमी व्यवस्था का न्यायालय, जिसमें विधि का शासन, विधि की समानता और नयी